(१) ये महा-महोत्सव पञ्च-कल्याणक .....

ये महा-महोत्सव पञ्च-कल्याणक आया मङ्गलकारी...
ये महा-महोत्सव ॥ टेक ॥

जब काललब्धिवश कोई जीव निज दर्शन शुद्धि रचाते हैं;
उसके सङ्ग में शुभभावों की धारा उत्कृष्ट बहाते हैं।
उन भावों के द्वारा तीर्थङ्कर कर्म प्रकृति रज आते हैं;
उनके पकने पर भव्य जीव वे तीर्थङ्कर बन जाते हैं॥ 1 ॥

इस भूतल पर पन्द्रह महीने धनराज रतन बरसाते हैं;
सुरपति की आज्ञा से नगरी दुल्हन की तरह सजाते हैं।
खुशियाँ छाई हैं दश दिश में यूँ लगे कहीं शहनाई बजे;
हर आतम में परमातम की भक्ति के स्वर हैं आज सजे॥ 2 ॥

माता ने अजब निराले अद्‌भुत देखें हैं सोलह सपने;
यह सुना तभी रोमाञ्च हुआ तीर्थङ्कर होंगे सुत अपने।
अवतार हुआ तीर्थङ्कर का क्या मुक्ति गर्भ में आई है;
क्षय होगा भ्रमण चतुर्गति का मङ्गल सन्देशा लाई है॥ 3 ॥

जब जन्म हुआ तीर्थङ्कर का सुरपति ऐरावत लाते हैं;
दर्शन से तृप्त नहीं होते, तब नेत्र हजार बनाते हैं।
जा पाण्डुशिला क्षीरोदधि जल से बालक को नहलाते हैं;
सुत माता-पिता को सौंप इन्द्र, तब ताण्डव नृत्य रचाते हैं॥ 4 ॥

वैराग्य समय जब आता है, प्रभु बारह भावना भाते हैं;
तब ब्रह्मलोक से लौकान्तिक आ, धन्य-धन्य यश गाते हैं।

विषयों का रस फीका पड़ता चेतनरस में ललचाते हैं;
तब भेष दिगम्बर धार प्रभु संयम में चित्त लगाते हैं॥ 5॥

नवधा भक्ति से पड़गाहें, हे मुनिवर यहाँ पधारो तुम;
हे गुरुवर अत्र-अत्र तिष्ठो, निर्दोष अशन कर धारो तुम।
है मन-वच-तन आहार शुद्ध अति भाव विशुद्ध हमारे हैं;
जन्मान्तर का यह पुण्य फला, श्री मुनिवर आज पधारे हैं॥ 6॥

सब दोष और अन्तराय रहित, गुरुवर ने जब आहार किया;
देवों ने पञ्चाश्चर्य किये, मुनिवर का जय-जयकार किया।
हैं धन्य-धन्य शुभ घड़ी आज, आँगन में सुरतरु आया है;
अब चिदानन्द रसपान हेतु, मुनिवर ने चरण बढ़ाया है॥ 7॥

प्रभु लीन हुए शुद्धातम में निज ध्यान अग्नि प्रगटाते हैं;
क्षायिक श्रेणी आरूढ़ हुए, तब घाति चतुष्क नशाते हैं।
प्रगटाते दर्शन-ज्ञान वीर्य-सुख लोकालोक लखाते हैं;
ऊँकारमयी दिव्यध्वनि से प्रभु मुक्ति-मार्ग बतलाते हैं॥ 8॥

प्रभु तीजे शुक्लध्यान में चढ़ योगों पर रोक लगाते हैं;
चौथे पाये में चढ़ प्रभुवर गुणथान चौदवाँ पाते हैं।
अगले ही क्षण अशरीरी होकर सिद्धालय में जाते हैं;
थिर रहे अनन्तानन्त काल कृतकृत्य दशा पा जाते हैं॥ 9॥

है धन्य-धन्य वे कहान गुरु जिनवर महिमा बतलाते हैं;
वे रङ्ग राग से भिन्न चिदातम का संगीत सुनाते हैं।
हे भव्यजीवों आओ सब जन, अब मोहभाव का त्याग करो;
यह पञ्च कल्याणक उत्सव कर, अब आतम का कल्याण करो॥ 10॥